अष्टलक्ष्मी स्तोत्रम्

सुमनस वन्दित सुन्दरि माधवि चन्द्र सहोदरि हेममये ।
मुनिगण मण्डित मोक्ष प्रदायिनि मञ्जुळ भाषिणि वेदनुते ॥
पङ्कज वासिनि देवसुपूजित सद्गुण वर्षिणि शान्तियुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि आदिलक्ष्मि सदा पालय माम् ॥ १॥

अहिकलि कल्मष नाशिनि कामिनि वैदिक रूपिणि वेदमये ।
क्षीर समुद्भव मङ्गल रूपिणि मन्त्र निवासिनि मन्त्रनुते ॥
मङ्गलदायिनि अम्बुज वासिनि देवगणाश्रित पादयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि धान्यलक्ष्मि सदा पालय माम् ॥ २॥

जयवर वर्णिनि वैष्णवि भार्गवि मन्त्र स्वरूपिणि मन्त्रमये ।
सुरगण पूजित शीघ्र फलप्रद ज्ञान विकासिनि शास्त्रनुते ॥
भवभय हारिणि पाप विमोचनि साधुजनाश्रित पादयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि धैर्यलक्ष्मि सदा पालय माम् ॥ ३॥

जयजय दुर्गति नाशिनि कामिनि सर्वफल प्रद शास्त्रमये ।
रथगज तुरग पदादि समावृत परिजन मण्डित लोकनुते ॥
हरिहर ब्रह्म सुपूजित सेवित ताप निवारिणि पादयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि गजलक्ष्मि रूपेण पालय माम् ॥ ४॥

अहिखग वाहिनि मोहिनि चक्रिणि राग विवर्धिनि ज्ञानमये ।
गुणगण वारिधि लोक हितैषिणि स्वरसप्त भूषित गाननुते ॥
सकल सुरासुर देवमुनीश्वर मानव वन्दित पादयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि सन्तानलक्ष्मि त्वं पालय माम् ॥ ५॥

जय कमलासनि सद्गति दायिनि ज्ञान विकासिनि गानमये ।
अनुदिन मर्चित कुङ्कुम धूसर भूषित वासित वाद्यनुते ॥
कनकधरा स्तुति वैभव वन्दित शङ्कर देशिक मान्य पदे ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि विजयलक्ष्मि सदा पालय माम् ॥ ६॥

प्रणत सुरेश्वरि भारति भार्गवि शोक विनाशिनि रत्नमये ।
मणिमय भूषित कर्ण विभूषण शान्ति समावृत हास्यमुखे ॥
नवनिधि दायिनि कलिमल हारिणि कामित फलप्रद हस्तयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि विद्यालक्ष्मि सदा पालय माम् ॥७॥

धिमिधिमि धिंधिमि धिंधिमि धिंधिमि दुन्दुभि नाद सुपूर्णमये ।
घुमघुम घुंघुम घुंघुम घुंघुम शङ्ख निनाद सुवाद्यनुते ॥
वेद पुराणेतिहास सुपूजित वैदिक मार्ग प्रदर्शयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि धनलक्ष्मि रूपेण पालय माम् ॥ ८॥